

تَوَقَّدُونَ ﴿٨٠﴾ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ

सुलगाते हो¹⁰⁶ और क्या वोह जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए उन जैसे

أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ ۚ وَهُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ﴿٨١﴾ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا

और नहीं बना सकता¹⁰⁷ क्यूं नहीं¹⁰⁸ और वोही है बड़ा पैदा करने वाला सब कुछ जानता उस का काम तो येही है कि जब

أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ

किसी चीज़ को चाहे¹⁰⁹ तो उस से फ़रमाए हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है¹¹⁰ तो पाकी है उसे जिस के हाथ

مَلَكُوتٌ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾

हर चीज़ का कब्ज़ा है और उसी की तरफ़ फेरे जाओगे¹¹¹

﴿١٨٢﴾ ﴿٣٠﴾ سُورَةُ الصَّفِّتِ مَكِّيَّةٌ ٥٢ ﴿٣٠﴾ ﴿٣٠﴾ رُكُوعَاتُهَا ٥ ﴿٣٠﴾

सूरए सफ़्त मक्किय्या है, इस में एक सो बियासी आयतें और पांच रकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

وَالصَّفِّتِ صَفًّا ۚ فَالزُّجْرَتِ زُجْرًا ۚ فَالتَّلِيَّتِ ذِكْرًا ۚ إِنَّ الْهَكْمُ

क़सम उन की कि बा काइदा सफ़ बांधें² फिर उन की कि झिड़क कर चलाएं³ फिर उन जमाअतों की कि कुरआन पढ़ें बेशक तुम्हारा मा'बूद

لَوْاحِدٌ ۚ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۗ

ज़रूर एक है मालिक आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है और मालिक मशरिफ़ों का⁴

106 : अरब के दो दरख़्त होते हैं जो वहां के जंगलों में कसरत से पाए जाते हैं, एक का नाम मर्ख है दूसरे का अफ़ार। उन की खासियत यह है कि जब उन की सब्ज शाखें काट कर एक दूसरे पर रगड़ी जाएं तो उन से आग निकलती है, बा वुजूदे कि वोह इतनी तर होती हैं कि उन से पानी टपकता होता है, इस में कुदरत की कैसी अजीबो ग़रीब निशानी है कि आग और पानी दोनों एक दूसरे की ज़िद, हर एक एक जगह एक लकड़ी में मौजूद, न पानी आग को बुझाए न आग लकड़ी को जलाए, जिस कादिरे मुल्लक की येह हिकमत है वोह अगर एक बदन पर मौत के बा'द जिन्दगी वारिद करे तो उस की कुदरत से क्या अजीब और इस को ना मुम्किन कहना आसारे कुदरत देख कर जाहिलाना व मुआनिदाना इन्कार करना है। 107 : या उन्हीं को बा'दे मौत जिन्दा नहीं कर सकता ? 108 : बेशक वोह इस पर कादिर है। 109 : कि पैदा करे 110 : या'नी मख़्लूक़ात का वुजूद उस के हुक्म के ताबेअ है। 111 : आखिरत में। 1 : सूरए وَالطِّفْتُ मक्किय्या है, इस में पांच रकूअ, एक सो बियासी आयतें और आठ सो साठ कलिमे और तीन हज़ार आठ सो छब्बीस हर्फ़ हैं। 2 : इस आयत में अल्लाह तबारक व तआला ने क़सम याद फ़रमाई चन्द गुरौहों की या तो मुराद इस से मलाएका के गुरौह हैं जो नमाज़ियों की तरह सफ़ बस्ता हो कर उस के हुक्म के मुतज़ि़र रहते हैं या उलमाए दीन के गुरौह जो तहज़ुद और तमाम नमाज़ों में सफ़े बांध कर मसरूफ़े इबादत रहते हैं या गाज़ियों के गुरौह जो राहे खुदा में सफ़े बांध कर दुश्मनाने हक़ के मुकाबिल होते हैं। 3 (मारक) : पहली तक्दीर पर झिड़क कर चलाने वालों से मुराद मलाएका हैं जो अब्र पर मुकर्र हैं और उस को हुक्म दे कर चलाते हैं और दूसरी तक्दीर पर वोह उलमा जो वा'ज व पन्द से लोगों को झिड़क कर दीन की राह चलाते हैं, तीसरी सूत में वोह गाज़ी जो घोड़ों को डपट कर जिहाद में चलाते हैं। 4 : या'नी आस्मान और ज़मीन और इन की दरमियानी काएनात और

إِنَّا زَيْنًا السَّمَاءِ الدُّنْيَا بِزَيْنَةٍ الْكَوَاكِبِ ٦ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ

वेशक हम ने नीचे के आस्मान⁵ को तारों के सिंगार से आरास्ता किया और निगाह रखने को हर शैतान

مَا رَادِ ٧ لَا يَسْعَوْنَ إِلَى الْمَلَا الْأَعْلَى وَيُقَدِّفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ٨

सरकश से⁶ आलमे बाला की तरफ कान नहीं लगा सकते⁷ और उन पर हर तरफ से मार फेंक होती है⁸

دُحُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ٩ إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شَهَابٌ

उन्हें भगाने को और उन के लिये⁹ हमेशा का अज़ाब मगर जो एकआध बार उचक ले चला¹⁰ तो रोशन अंगारा

ثَابِتٌ ١٠ فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنِ خَلَقْنَا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّنْ

उस के पीछे लगा¹¹ तो उन से पूछे¹² क्या उन की पैदाइश ज़ियादा मज़बूत है या हमारी और मख्लूक आस्मानों और फिरिशतों वगैरा की¹³ वेशक हम ने उन को

طِينٍ لَّا زِبٍ ١١ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ١٢ وَإِذَا ذُكِرُوا لِآيْدِكُمْ ١٣

चिपक्ती मिट्टी से बनाया¹⁴ बल्कि तुम्हें अचम्बा आया¹⁵ और वोह हंसी करते हैं¹⁶ और समझाए नहीं समझते

وَإِذَا سَأَلُوا آيَةَ يَسْتَسْخَرُونَ ١٣ وَقَالُوا إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ١٥

और जब कोई निशानी देखते हैं¹⁷ ठगु करते हैं और कहते हैं येह तो नहीं मगर खुला जादू

عَ إِذَا مِثْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّا لَسَبْعُوثُونَ ١٦ أَوْ آبَاؤُنَا

क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे क्या हम जरूर उठाए जाएंगे और क्या हमारे अगले

الْأَوْلَادُونَ ١٧ قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دُخْرُونَ ١٨ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ

बाप दादा भी¹⁸ तुम फ़रमाओ हां यूँ कि ज़लील हो के तो वोह¹⁹ तो एक ही झिड़क है²⁰

तमाम हुदूद व जिहात सब का मालिक वोही है तो कोई दूसरा किस तरह मुस्तहिकके इबादत हो सकता है, लिहाजा वोह शरीक से मुनज़्जु है। 5 : जो ज़मीन के ब निस्बत और आस्मानों से करीब तर है। 6 : या'नी हम ने आस्मान को हर एक ना फ़रमान शैतान से महफूज़ रखा कि जब शयातीन आस्मान पर जाने का इरादा करें तो फिरिशते शिहाब मार कर उन को दफ़अ कर दें। लिहाजा शयातीन आस्मान पर नहीं जा सकते और 7 : और आस्मान के फिरिशतों की गुफ़्तगू नहीं सुन सकते। 8 : अंगारों की। जब वोह इस निव्यत से आस्मान की तरफ जाएं। 9 : आखिरत में 10 : या'नी अगर कोई शैतान मलाएका का कोई कलिमा कभी ले भागा 11 : कि उसे जलाए और ईजा पहुंचाए। 12 : या'नी कुफ़फ़ारे मक्का से 13 : तो जिस कादिरे बरहक को आस्मान व ज़मीन जैसी अज़ीम मख्लूक का पैदा कर देना कुछ भी मुशिकल और दुश्वार नहीं तो इन्सानों का पैदा करना उस पर क्या मुशिकल हो सकता है। 14 : येह उन के जो'फ़ की एक और शहादत है कि उन की पैदाइश का अस्ल मादा मिट्टी है जो कोई शिहत व कुव्वत नहीं रखती और इस में उन पर एक और बुरहान काइम फ़रमाई गई है कि चिपक्ती मिट्टी उन का मादाए पैदाइश है तो अब फिर जिस्म के गल जाने और गायत येह है कि मिट्टी हो जाने के बा'द उस मिट्टी से फिर दोबारा पैदाइश को वोह क्यूँ ना मुम्किन जानते हैं ! मादा मौजूद और सानेअ मौजूद फिर दोबारा पैदाइश कैसे मुहाल हो सकती है ! 15 : उन की तकज़ीब करने से कि ऐसी वाजेहुहलालह आयात व बय्यिनात के बा वुजूद वोह किस तरह तकज़ीब करते हैं। 16 : आप से और आप के तअज़्जुब से या मरने के बा'द उठने से। 17 : मिस्ल शक़कुल क़मर वगैरा के 18 : जो हम से ज़माने में मुकद्दम हैं। कुफ़फ़ार के नज़्दीक उन के बाप दादा का ज़िन्दा किया जाना खुद उन के ज़िन्दा किये जाने से ज़ियादा बईद था इस लिये उन्हों ने येह कहा।

اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ से फ़रमाता है : 19 : या'नी बअस 20 : एक ही होलनाक आवाज़ है नफ़ख़ए सानिया की

فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوا أَيَوِيَّلُنَا هَذَا يَوْمَ الرَّيِّنِ ﴿٢٠﴾ هَذَا يَوْمٌ

जभी वोह²¹ देखने लगेंगे और कहेंगे हाए हमारी खराबी उन से कहा जाएगा येह इन्साफ़ का दिन है²² येह है वोह

الْفُصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَكْدِبُونَ ﴿٢١﴾ أَحْشَرُوا وَالَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَرْوَاجُهُمْ

फैसले का दिन जिसे तुम झुटलाते थे²³ ज़ालिमों और उन के जोड़ों को²⁴

وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٢٢﴾ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ﴿٢٣﴾

और जो कुछ वोह पूजते थे **अल्लाह** के सिवा उन सब को हांको राहे दोजख की तरफ

وَقَفُّوهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ﴿٢٥﴾ بَلْ هُمْ الْيَوْمَ

और उन्हें ठहराओ²⁵ उन से पूछना है²⁶ तुम्हें क्या हुवा एक दूसरे की मदद क्यूं नहीं करते²⁷ बल्कि वोह आज

مُسْتَسْلِمُونَ ﴿٢٦﴾ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٧﴾ قَالُوا إِنَّا كُمْ

गरदन डाले हैं²⁸ और उन में एक ने दूसरे की तरफ मुंह किया आपस में पूछते हुए बोले²⁹ तुम

كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾ قَالُوا بَلْ لَمْ تَكُونُوا أُمَّوْمِينَ ﴿٢٩﴾ وَمَا

हमारे दहनी तरफ से बहकाने आते थे³⁰ जवाब देंगे तुम खुद ही ईमान न रखते थे³¹ और

كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِينَ ﴿٣٠﴾ فَحَقِّ عَلَيْنَا

हमारा तुम पर कुछ काबू न था³² बल्कि तुम सरकश लोग थे तो साबित हो गई हम पर

قَوْلِ رَبِّنَا إِنَّا لَذٰلِكَ أَقْبٰوُنَ ﴿٣١﴾ فَأَعْوَيْنٰكُمْ إِنَّا كُنَّا غٰوِينَ ﴿٣٢﴾ فَإِنَّهُمْ

हमारे रब की बात³³ हमें ज़रूर चखना है³⁴ तो हम ने तुम्हें गुमराह किया कि हम खुद गुमराह थे तो

21 : जिन्दा हो कर अपने अफ़्वाल और पेश आने वाले अहवाल 22 : या'नी फ़िरिश्ते कहेंगे कि येह इन्साफ़ का दिन है येह हिसाब व जज़ा का दिन है 23 : दुन्या में और फ़िरिश्तों को हुक्म दिया जाएगा : 24 : ज़ालिमों से मुराद काफ़िर हैं और उन के जोड़ों से मुराद उन के शयातीन जो दुन्या में उन के जलीस व करीन रहते थे, हर एक काफ़िर अपने शैतान के साथ एक ही जन्जीर में जकड़ दिया जाएगा और हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि जोड़ों से मुराद अशबाह व अम्साल हैं या'नी हर काफ़िर अपने ही किस्म के कुफ़ार के साथ हांका जाएगा, बुत परस्त बुत परस्तों के साथ और आतश परस्त आतश परस्तों के साथ, **وَعَلَى هَذَا الْقِيَاسِ** 25 : सिरात के पास 26 : हदीस शरीफ़ में है कि रोजे क्रियामत बन्दा जगह से हिल न सकेगा जब तक चार बातें उस से न पूछ ली जाएं एक उस की उम्र कि किस काम में गुज़री । दूसरे उस का इल्म कि उस पर क्या अमल किया । तीसरे उस का माल कि कहां से कमाया कहां खर्च किया । चौथे उस का जिस्म कि इस को किस काम में लाया । 27 : येह उन से जहन्म के खाज़िन ब तरीके तौबीख कहेंगे कि दुन्या में तो एक दूसरे की इमदाद पर बहुत गर्रा रखते थे, आज देखो कैसे आजिज हो, तुम में से कोई किसी की मदद नहीं कर सकता । 28 : आजिज व ज़लील हो कर । 29 : अपने सरदारों से जो दुन्या में बहकाते थे । 30 : या'नी बज़ोरे कुव्वत हमें गुमराही पर आमादा करते थे । इस पर कुफ़ार के सरदार कहेंगे और 31 : पहले ही से काफ़िर थे और ईमान से ब इख़्तियारे खुद ए'राज़ कर चुके थे । 32 : कि हम तुम्हें अपनी इत्तिबाअ पर मजबूर करते 33 : जो उस ने फरमाई कि मैं ज़रूर जहन्म को जिननों और इन्सानों से भरूंगा । लिहाज़ा 34 : उस का अज़ाब । गुमराहों को भी और गुमराह करने वालों को भी ।

يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْجُرْمِ مِثْنَ ﴿٣٣﴾

उस दिन³⁵ वोह सब के सब अज़ाब में शरीक हैं³⁶ मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं

إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُولُونَ

बेशक जब उन से कहा जाता था कि **اللَّهُ** के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो ऊंचे खिंचते (तकबुर करते) थे³⁷ और कहते थे

أَبْنَاؤُنَا لِلَّهِ غَيْرُ مُجْتَوِينَ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَقَ

क्या हम अपने खुदाओं को छोड़ दें एक दीवाना शाइर के कहने से³⁸ बल्कि वोह तो हक़ लाए हैं और उन्होंने ने रसूलों की

الرُّسُلِينَ ﴿٣٤﴾ إِنَّكُمْ لَذَائِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا

तस्दीक़ फ़रमाई³⁹ बेशक तुम्हें ज़रूर दुख की मार चखनी है तो तुम्हें बदला न मिलेगा मगर

كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ أُولَئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ

अपने किये का⁴⁰ मगर जो **اللَّهُ** के चुने हुए बन्दे हैं⁴¹ उन के लिये वोह रोज़ी है

مَعْلُومٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهَ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾ عَلَى سُرُرٍ

जो हमारे इल्म में है मेवे⁴² और उन की इज़्ज़त होगी चैन के बागों में तख्तों पर

مُتَقَبِلِينَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاوِسٍ مِّنْ مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾ بِيضَاءَ لَدَدَةٍ

होंगे आमने सामने⁴³ उन पर दौरा होगा निगाह के सामने बहती शराब के जाम का⁴⁴ सफ़ेद रंग⁴⁵ पीने वालों

لِلشَّرِبِينَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ﴿٤٧﴾ وَعِنْدَهُمْ

के लिये लज़्ज़त⁴⁶ न उस में खुमार है⁴⁷ और न उस से उन का सर फिरे⁴⁸ और उन के पास हैं जो

قُصْرَاتُ الظَّرْفِ عَيْنٍ ﴿٤٨﴾ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ﴿٤٩﴾ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى

शोहरों के सिवा दूसरी तरफ़ आंख उठा कर न देखेंगी⁴⁹ बड़ी आंखों वालियां गोया वोह अन्डे हैं पोशीदा रखे हुए⁵⁰ तो उन में⁵¹ एक ने दूसरे की

35 : या'नी रोज़े क़ियामत 36 : गुमराह भी और उन के गुमराह करने वाले सरदार भी क्यूं कि येह सब दुन्या में गुमराही में शरीक थे ।

37 : और तौहीद क़बूल न करते थे, शिक़ के बाजू न आते थे 38 : या'नी सख़ियदे आलम हबीबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

के फ़रमाने से । 39 : दीन व तौहीद व नफ़िये शिक़ में । 40 : उस शिक़ और तकज़ीब का जो दुन्या में कर आए हो । 41 : ईमान और इख़लास

वाले 42 : और नफ़ीस व लज़ीज़ ने'मते, खुश जाएका, खुशबूदार, खुश मन्ज़र । 43 : एक दूसरे से मानूस और मसरूर । 44 : जिस की

पाकीज़ा नहरें निगाहों के सामने जारी होंगी । 45 : दूध से भी ज़ियादा सफ़ेद 46 : ब ख़िलाफ़ दुन्या की शराब के जो बदबूदार और बद जाएका

होती है और पीने वाला इस को पीते वक्त मुंह बिगाड़ बिगाड़ लेता है । 47 : जिस से अक्ल में खलल आए 48 : ब ख़िलाफ़ दुन्या

की शराब के जिस में बहुत से फ़सादात और ऐब हैं, इस से पेट में भी दर्द होता है सर में भी, पेशाब में भी तकलीफ़ हो जाती है, तबीअत

मालिश करती है, कै आती है, सर चकराता है, अक्ल ठिकाने नहीं रहती । 49 : कि उस के नज़दीक उस का शोहर ही साहिबे हुस्न और प्यारा है । 50 : गर्दों गुबार से पाक साफ़ दिलकश रंग । 51 : या'नी अहले जन्नत में से ।

بَعْضِ يَتَسَاءَلُونَ ٥٠ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ٥١ يَقُولُ

तुझ से कहा करता⁵² मुझ से कहा करता⁵³ उन में से कहने वाला बोला मेरा एक हम नशीन था⁵⁴ तूफ़ मुंह किया पूछते हुए

إِنَّكَ لَمِنَ الْمَصْدِقِينَ ٥٢ ءِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّآ

क्या तुम इसे सच मानते हो⁵⁴ क्या जब हम मर कर मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हमें

لَمَدِيُونُونَ ٥٣ قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُطَّلِعُونَ ٥٤ فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ

जजा सजा दी जाएगी⁵⁵ कहा क्या तुम झांक कर देखोगे⁵⁶ फिर झांका तो उसे बीच भड़क्ती

الْجَحِيمِ ٥٥ قَالَ تَاللَّهِ إِن كُنتَ لَتَرُدِينِ ٥٦ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي

आग में देखा⁵⁷ कहा खुदा की कसम करीब था कि तू मुझे हलाक कर दे⁵⁸ और मेरा रब फज़ल न करे⁵⁹

لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ٥٧ أَفَأَنْحُنُّ بِسَيِّئِنَا ٥٨ إِلَّا مَوْتَنَا الْأُولَى

तो ज़रूर मैं भी पकड़ कर हाज़िर किया जाता⁶⁰ तो क्या हमें मरना नहीं मगर हमारी पहली मौत⁶¹

وَمَا نَحْنُ بِبُعْدٍ بَيْنَ ٥٩ إِنَّ هَذَا هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ٦٠ لِيَسْئَلِ هَذَا

और हम पर अज़ाब न होगा⁶² बेशक येही बड़ी काम्याबी है ऐसी ही बात के लिये

فَلْيَعْمَلِ الْعِبَادُونَ ٦١ أَذَلِكَ خَيْرٌ نُزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ٦٢ إِنَّا

कामियों को काम करना चाहिये तो येह मेहमानी भली⁶³ या थोहड़ का पेड़⁶⁴ बेशक हम ने

جَعَلْنَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ٦٣ إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ٦٤

उसे ज़ालिमों की जांच किया है⁶⁵ बेशक वोह एक पेड़ है कि जहन्म की जड़ में निकलता है⁶⁶

52 : कि दुनिया में क्या हालात व वाक़िआत पेश आए ? 53 : दुनिया में । जो मरने के बा'द उठने का मुन्किर था और इस की निस्वत तन्ज़ के तरीके पर 54 : या'नी मरने के बा'द उठने को 55 : और हम से हिसाब लिया जाएगा । येह बयान कर के उस जन्नती ने अपने जन्नती दोस्तों से 56 : कि मेरे उस हम नशीन का जहन्म में क्या हाल है ? 57 : कि अज़ाब के अन्दर गिरिफ़्तार है तो उस जन्नती ने उस से 58 : राहे रास्त से बहका कर 59 : और अपने रहमत व करम से मुझे तेरे इग़वा से महफूज़ न रखता और इस्लाम पर काइम रहने की तौफ़ीक़ न देता 60 : तेरे साथ जहन्म में । और जब मौत ज़ब्द कर दी जाएगी तो अहले जन्नत फ़िरिशतों से कहेंगे : 61 : वोही जो दुनिया में हो चुकी 62 : फ़िरिशते कहेंगे : नहीं । और अहले जन्नत का येह दरयाफ़्त करना **اَعْلَاهُ** तआला की रहमत के साथ तलज़ुज़ और दाइमी हयात की ने'मत और अज़ाब से मामू न होने के एहसान पर उस की ने'मत का ज़िक्र करने के लिये है और इस ज़िक्र से उन्हें सुरूर हासिल होगा । 63 : या'नी जन्नती ने'मतें और लज़ज़तें और वहां के नफ़ीस और लतीफ़ मआकिल व मशाारिब और दाइमी ऐश और बे निहायत राहतो सुरूर 64 : निहायत तलख़, इन्तिहा का बदबूदार, हद दरजे का बद मज़ा, सख़्त ना गवार जिस से दोज़खियों की मेज़बानी की जाएगी और उन को इस के खाने पर मजबूर किया जाएगा । 65 : कि दुनिया में काफ़िर इस का इन्कार करते हैं और कहते हैं कि आग दरख़्तों को जला डालती है तो आग में दरख़्त कैसे होगा । 66 : और उस की शाखें जहन्म के दरकात में पहुंचती हैं ।

طَلْعَهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيْطَانِ ﴿٢٥﴾ فَإِنَّهُمْ لَا كُفُونَ مِنْهَا فَمَا لَوْ

उस का शिगूफ़ा जैसे देवों के सर⁶⁷ फिर बेशक वोह उस में से खाएंगे⁶⁸ फिर उस से

مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا شَوْبًا مِّنْ حَيْمٍ ﴿٢٧﴾ ثُمَّ إِنَّ نَّازِعَاتٍ

पेट भरेंगे फिर बेशक उन के लिये उस पर खौलते पानी की मिलोनी (मिलावट) है⁶⁹ फिर उन की बाज़ग़शत (वापसी)

لَا إِلَى الْجَحِيمِ ﴿٢٨﴾ إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ صَالِينَ ﴿٢٩﴾ فَهُمْ عَلَىٰ آثَرِهِمْ

ज़रूर भड़कती आग की तरफ़ है⁷⁰ बेशक उन्होंने ने अपने बाप दादा गुमराह पाए तो वोह उन्हीं के निशाने क़दम पर

يُهْرَعُونَ ﴿٣٠﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرًا لَا وَلِيْنَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا

दौड़े जाते हैं⁷¹ और बेशक उन से पहले बहुत से अगले गुमराह हुए⁷² और बेशक हम ने

فِيهِمْ مُّنذِرِينَ ﴿٣٢﴾ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذِرِينَ ﴿٣٣﴾ إِلَّا عِبَادَ

उन में डर सुनाने वाले भेजे⁷³ तो देखो डराए गयों का कैसा अन्जाम हुवा⁷⁴ मगर **اللَّهُ**

اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿٣٤﴾ وَلَقَدْ نَادَيْنَا نَوْحًا فَلَنِعْمَ السُّبِيُّونَ ﴿٣٥﴾ وَنَجَّيْنَاهُ

के चुने हुए बन्दे⁷⁵ और बेशक हमें नूह ने पुकारा⁷⁶ तो हम क्या ही अच्छे क़बूल फ़रमाने वाले⁷⁷ और हम ने उसे

وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿٣٦﴾ وَجَعَلْنَا دَرِيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ﴿٣٧﴾ وَتَرَكْنَا

और उस के घर वालों को बड़ी तकलीफ़ से नजात दी और हम ने उसी की औलाद बाक़ी रखी⁷⁸ और हम ने

عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿٣٨﴾ سَلَامٌ عَلَىٰ نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ﴿٣٩﴾ إِنَّا كَذَلِكَ

पिछलों में उस की ता'रीफ़ बाक़ी रखी⁷⁹ नूह पर सलाम हो जहान वालों में⁸⁰ बेशक हम ऐसा ही

67 : या'नी निहायत बद है अत और क़बीहुल मन्ज़र । 68 : शिद्दत की भूक से मजबूर हो कर 69 : या'नी जहन्नमी थोहड़ से उन के पेट भरेंगे वोह जलता होगा पेटों को जलाएगा उस की सोज़िश से प्यास का ग़्लबा होगा और मुद्दत तक तो प्यास की तकलीफ़ में रखे जाएंगे, फिर जब पीने को दिया जाएगा तो गर्म खौलता पानी उस की गरमी और सोज़िश उस थोहड़ की गरमी और जलन से मिल कर और तकलीफ़ व बेचैनी बढ़ाएगी । 70 : क्यूं कि ज़क़ूम खिलाने और गर्म पानी पिलाने के लिये उन को अपने दरकात से दूसरे दरकात में ले जाया जाएगा, इस के बा'द फिर अपने दरकात की तरफ़ लौटाए जाएंगे । इस के बा'द उन के मुस्तहिक्के अज़ाब होने की इल्लत इर्शाद फ़रमाई जाती है 71 : और गुमराही में उन का इत्तिबाअ करते हैं और हक़ के दलाइले वाजेहा से आंखें बन्द कर लेते हैं । 72 : इसी वजह से कि उन्हीं ने अपने बाप दादा की ग़लत राह न छोड़ी और हुज्जत व दलील से फ़ाएदा न उठाया । 73 : या'नी अम्बिया السّلام عَلَيْهِمْ जिन्होंने उन को गुमराही और बद अमली के बुरे अन्जाम का खौफ़ दिलाया । 74 : कि वोह अज़ाब से हलाक किये गए । 75 : ईमानदार जिन्होंने ने अपने इख़्लास के सबब नजात पाई । 76 : और हम से अपनी कौम के अज़ाब व हलाक की दरखास्त की । 77 : कि हम ने उन की दुआ क़बूल की और उन के दुश्मनों के मुकाबले में मदद की और उन से पूरा इन्तिकाम लिया कि उन्हें ग़र्क़ कर के हलाक कर दिया । 78 : तो अब दुन्या में जितने इन्सान हैं सब हज़रते नूह عَلَيْهِ السّلام की नस्ल से हैं । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि हज़रते नूह عَلَيْهِ السّلام وَالسّلام के कशरी से उतरने के बा'द उन के हमराहियों में जिस क़दर मर्द व औरत थे सभी मर गए सिवाए आप की औलाद और उन की औरतों के, उन्हीं से दुन्या की नस्लें चलीं,

نَجْرَى الْمُحْسِنِينَ ۸۰ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۸۱ ثُمَّ أَغْرَقْنَا

सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में है फिर हम ने दूसरों को

الْآخِرِينَ ۸۲ وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ ۸۳ إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ

डुबो दिया⁸¹ और बेशक उसी के गुरौह से इब्राहीम है⁸² जब कि अपने रब के पास हाज़िर हुवा गैर से

سَلِيمٍ ۸۴ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ۸۵ أَيْفَا الْهَاتِهِ دُونَ

सलामत दिल ले कर⁸³ जब उस ने अपने बाप और अपनी कौम से फ़रमाया⁸⁴ तुम क्या पूजते हो क्या बोहतान से **अल्लाह** के सिवा

اللَّهِ تُرِيدُونَ ۸۶ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۸۷ فَظَرَ نَظْرَةً فِي

और खुदा चाहते हो तो तुम्हारा क्या गुमान है रबुल आलमीन पर⁸⁵ फिर उस ने एक निगाह सितारों

النُّجُومِ ۸۸ فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۸۹ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۹۰ فَرَاغَ إِلَى

को देखा⁸⁶ फिर कहा मैं बीमार होने वाला हूँ⁸⁷ तो वोह उस पर पीठ दे कर फिर गए⁸⁸ फिर उन के खुदाओं की तरफ़

الهِتَمِ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۹۱ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ۹۲ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ

छुप कर चला तो कहा क्या तुम नहीं खाते⁸⁹ तुम्हें क्या हुवा कि नहीं बोलते⁹⁰ तो लोगों की नज़र बचा कर उन्हें

अरब और फ़ारस और रूम आप के फ़रज़न्द साम की औलाद से हैं और सूडान के लोग आप के बेटे हाम की नस्त से और तुर्क और याजूज

माजूज वगैरा आप के साहिब जादे याफ़िस की औलाद से । 79 : या'नी उन के बा'द वाले अम्बिया **السّلام** عَلَيْهِمْ और उन की उम्मतों में हज़रते

नूह **عَلَيْهِ السّلام** का ज़िक्र जमील बाकी रखा । 80 : या'नी मलाएका और जिन्नो इन्स सब उन पर क़ियामत तक सलाम भेजा करें । 81 : या'नी

हज़रते नूह **عَلَيْهِ السّلام** की कौम के काफ़िरों को । 82 : या'नी हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السّلام** हज़रते नूह **عَلَيْهِ السّلام** के दीनो मिल्लत और उन्ही के

तरीक व सुन्नत पर हैं । हज़रते नूह **عَلَيْهِ السّلام** और हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السّلام** के दरमियान दो हज़ार छ⁶ सो चालीस बरस का ज़मानी फ़र्क

है और दोनों हज़रत के दरमियान जो अहद गुज़रा उस में सिर्फ़ दो नबी हुए : हज़रते हूद व हज़रते सालेह **السّلام** عَلَيْهِمَا । 83 : या'नी हज़रते

इब्राहीम **عَلَيْهِ السّلام** ने अपने क़ल्ब को **अल्लाह** तआला के लिये ख़ालिस किया और हर चीज़ से फ़ारिग़ कर लिया । 84 : ब तरीके तौबीख़

85 : कि जब तुम उस के सिवा दूसरे को पूजोगे तो क्या वोह तुम्हें बे अज़ाब छोड़ देगा ? बा वुजूदे कि तुम जानते हो कि वोही मुड़मे हक़ीकी

मुस्तहिक्के इबादत है । कौम ने कहा कि कल को हमारी ईद है, जंगल में मेला लोगो, हम नफ़ीस खाने पका कर बुतों के पास रख जाएंगे और

मेले से वापस हो कर तबरक के तौर पर उन को खाएंगे, आप भी हमारे साथ चलें और मज्मअ और मेले की रौनक देखें, वहां से वापस हो

कर बुतों की ज़ीनत और सजावट और उन का बनाव सिंगार देखें, येह तमाशा देखने के बा'द हम समझते हैं कि आप बुत परस्ती पर हमें

मलामत न करेंगे । 86 : जैसे कि सितारा शनास नुजूम के माहिर सितारों के मवाकेए इत्तिसालात व इन्सिराफ़ात को देखा करते हैं । 87 : कौम

नुजूम की बहुत मो'तक़िद थी, वोह समझी कि हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السّلام** ने सितारों से अपने बीमार होने का हाल मा'लूम कर लिया, अब

येह किसी मुतअदी मरज़ में मुब्तला होने वाले हैं, मुतअदी मरज़ से वोह लोग बहुत डरते थे । **मस्अला** : इल्मे नुजूम हक़ है और सीखने में

मशगूल होना मन्सूख़ हो चुका । **मस्अला** : शरअन कोई मरज़ मुतअदी नहीं होता या'नी एक शख़्स का मरज़ बि ऐनिही दूसरे में नहीं पहुंच

जाता, मादों के फ़साद और हवा वगैरा की सम्तों के असर से एक वक़्त में बहुत से लोगों को एक तरह के मरज़ हो सकते हैं, लेकिन हुदूस मरज़

का हर एक में जुदागाना है, किसी का मरज़ किसी दूसरे में नहीं पहुंचता । 88 : अपनी ईद की तरफ़ और हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السّلام** को छोड़

गए, आप बुतखाने में आए । 89 : या'नी उस खाने को जो तुम्हारे सामने रखा है, बुतों ने इस का कुछ जवाब न दिया और वोह जवाब ही

क्या देते तो आप ने फ़रमाया : 90 : इस पर भी बुतों की तरफ़ से कुछ जवाब न हुवा, वोह बेजान पथ्थर थे जवाब क्या देते ।

ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ۙ ۹۳ ۙ فَأَقْبَلُوْا إِلَيْهِ يَزْفُونَ ۙ ۹۴ ۙ قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا

दहने हाथ से मारने लगा⁹¹ तो काफ़िर उस की तरफ़ जल्दी करते आए⁹² फ़रमाया क्या अपने हाथ के तराशों

تَتَحْسَبُونَ ۙ ۹۵ ۙ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ۙ ۹۶ ۙ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا

को पूजते हो और **ALLAH** ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आ'माल को⁹³ बोले इस के लिये एक इमारत चुनो⁹⁴

فَالْقَوْلُ فِي الْجَحِيمِ ۙ ۹۷ ۙ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِيْنَ ۙ ۹۸ ۙ وَ

फिर इसे भड़क्ती आग में डाल दो तो उन्होंने ने उस पर दाउं चलना (फ़रेब करना) चाहा हम ने उन्हें नीचा दिखाया⁹⁵ और

قَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِيْنَ ۙ ۹۹ ۙ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۙ ۱۰۰ ۙ

कहा मैं अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूँ⁹⁶ अब वोह मुझे राह देगा⁹⁷ इलाही मुझे लाइक़ औलाद दे

فَبَشِّرْنَاهُ بِعَلِيمٍ حَلِيمٍ ۙ ۱۰۱ ۙ فَلَمَّا بَدَعَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَئِي إِنِّي أَرَىٰ فِي

तो हम ने उसे खुश ख़बरी सुनाई एक अक़ल मन्द लड़के की फिर जब वोह उस के साथ काम के काबिल हो गया कहा ऐ मेरे बेटे मैं ने ख़्वाब

الْمَنَامِ إِنِّي أَدْبَحُكَ فَانظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۙ ۱۰۲ ۙ قَالَ يَا بَتِ افْعَلْ مَا تَأْمُرُ

देखा कि मैं तुझे ज़ब्द करता हूँ⁹⁸ अब तू देख तेरी क्या राय है⁹⁹ कहा ऐ मेरे बाप कीजिये जिस बात का आप को हुक्म होता है

سَتَجِدُنِيٰ إِن شَاءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ۙ ۱۰۳ ۙ فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِيْنَ ۙ ۱۰۴ ۙ

खुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे तो जब उन दोनों ने हमारे हुक्म पर गरदन रखी और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटाया उस वक़्त का हाल न पूछ¹⁰⁰

وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيْمُ ۙ ۱۰۵ ۙ قَدْ صَدَّقَت الرُّءْيَا إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي

और हम ने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम बेशक तू ने ख़्वाब सच कर दिखाई¹⁰¹ हम ऐसा ही सिला देते हैं

91 : और हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बुतों को मार मार कर पारा पारा कर दिया । जब काफ़ि़रों को इस की ख़बरी पहुंची 92 : और हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** से कहने लगे कि हम तो इन बुतों को पूजते हैं तुम इन्हें तोड़ते हो 93 : तो पूजने का मुस्तहक़ वोह है न कि बुत । इस पर वोह हैरान हो गए और उन से कोई जवाब न बन आया । 94 : पथर की तीस गज़ लम्बी बीस गज़ चौड़ी चार दीवारी, फिर उस को लकड़ियों से भर दो और उन में आग लगा दो, यहां तक कि आग जोर पकड़े । 95 : हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** को उस आग में सलामत रख कर । चुनान्चे आग से आप सलामत बरआमद हुए 96 : इस दारुल कुफ़्र से हिज़रत कर के, जहां जाने का मेरा रब हुक्म दे 97 : चुनान्चे ब हुक्मे इलाही आप सर ज़मीने शाम में अर्ज़े मुक़द्दसा के मक़ाम पर पहुंचे तो आप ने अपने रब से दुआ की : 98 : या'नी तेरे ज़ब्द का इन्तिज़ाम कर रहा हूँ और अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** की ख़्वाब हक़ होती है और उन के अफ़्वाल ब हुक्मे इलाही हुवा करते हैं । 99 : येह आप ने इस लिये कहा था कि फ़रज़न्द को ज़ब्द से वद्दशत न हो और इत्ताअते अग्रे इलाही के लिये वोह ब रग़बत तय्यार हों । चुनान्चे इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द ने रिज़ाए इलाही पर फ़िदा होने का कमाले शौक़ से इज़हार किया । 100 : येह वाक़िआ मिना में वाक़ेअ हुवा और हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फ़रज़न्द के गले पर छुरी चलाई, कुदरते इलाही कि छुरी ने कुछ भी काम न किया । 101 : इत्ताअत व फ़रमां बरदारी कमाल को पहुंचा दी, फ़रज़न्द को ज़ब्द के लिये बे दरेग़ पेश कर दिया, बस अब इतना काफ़ी है ।

الْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾ وَقَدَيْنَهُ بِذَبِيحٍ

नेकों को बेशक यह रोशन जांच थी और हम ने एक बड़ा ज़बीहा उस के सदके में दे कर

عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٠٨﴾ سَلَّمَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٠٩﴾ كَذَلِكَ

उसे बचा लिया¹⁰² और हम ने पिछलों में उस की तारीफ़ बाकी रखी सलाम हो इब्राहीम पर¹⁰³ हम ऐसा ही

نَجَّرَى الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٠﴾ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنَاهُ

सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में हैं और हम ने उसे खुश ख़बरी दी

بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٢﴾ وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ﴿١١٣﴾ وَمِنْ

इस्हाक़ की कि ग़ैब की ख़बरे बताने वाला हमारे कुर्बे ख़ास के सज़ावोरों में¹⁰⁴ और हम ने बरकत उतारी उस पर और इस्हाक़ पर¹⁰⁵ और उन की

ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٍ وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ مُبِينٌ ﴿١١٤﴾ وَلَقَدْ مَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَ

औलाद में कोई अच्छा काम करने वाला¹⁰⁶ और कोई अपनी जान पर सरीह जुल्म करने वाला¹⁰⁷ और बेशक हम ने मूसा और हारून

هُرُونَ ﴿١١٥﴾ وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكُرْبِ الْعَظِيمِ ﴿١١٦﴾ وَنَصَرْنَاهُمْ

पर एहसान फ़रमाया¹⁰⁸ और उन्हें और उन की क़ौम¹⁰⁹ को बड़ी सख़्ती से नजात बख़्शी¹¹⁰ और उन की हम ने मदद फ़रमाई¹¹¹

فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٧﴾ وَأَتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ﴿١١٨﴾ وَهَدَيْنَاهُمَا

तो वोही ग़ालिब हुए¹¹² और हम ने उन दोनों को रोशन किताब अता फ़रमाई¹¹³ और उन को

الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١١٩﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ﴿١٢٠﴾ سَلَّمَ عَلَىٰ

सीधी राह दिखाई और पिछलों में उन की तारीफ़ बाकी रखी सलाम हो

مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١٢١﴾ إِنَّكَ كَذَلِكَ نَجَّرَى الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢٢﴾ إِنَّهُمَا مِنْ

मूसा और हारून पर बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह दोनों

102 : इस में इख़िलाफ़ है कि येह फ़रज़न्द हज़रते इस्माईल हैं या हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِمَا السَّلَام लेकिन दलाइल की कुव्वत येही बताती है कि ज़बीह हज़रते इस्माईल ही हैं عَلَيْهِ السَّلَام और फ़िदये में जन्म से बकरी भेजी गई थी जिस को हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़ब्ह फ़रमाया ।

103 : हमारी तरफ़ से 104 : वाकिअए ज़ब्ह के बा'द हज़रते इस्हाक़ की खुश ख़बरी इस की दलील है कि ज़बीह हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام हैं । 105 : हर तरह की बरकत, दीनी भी और दुन्यवी भी और जाहिरी बरकत येह है कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में कसरत की और हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की नस्ल से बहुत से अम्बिया किये, हज़रते या'कूब से ले कर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام तक । 106 : या'नी मोमिन 107 : या'नी काफ़िर । फ़ाएदा : इस से मा'लूम हुवा कि किसी बाप के साहिबे फ़ज़ाइले कसीरा होने से औलाद का भी वैसा ही होना लाज़िम नहीं, येह **اَللّٰهُ** तआला की शानें हैं कभी नेक से नेक पैदा करता है, कभी बद से बद, कभी बद से नेक, न औलाद का बद होना आबा के लिये ऐब हो न आबा की बदी औलाद के लिये । 108 : कि उन्हें नुबुव्वत व रिसालत इनायत फ़रमाई । 109 : या'नी बनी इसराईल 110 : कि फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के मज़ालिम से रिहाई दी । 111 : किब्बियों के मुक़ाबिल 112 : फ़िरऔन और उस की क़ौम पर । 113 : जिस का बयान बलीग़

عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٢﴾ وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾ إِذْ قَالَ

हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में हैं और बेशक इल्यास पैगम्बरों से है¹¹⁴ जब उस ने

لِقَوْمِهِ أَلَّا تَتَّقُونَ ﴿١٢٣﴾ أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ﴿١٢٥﴾

अपनी कौम से फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं¹¹⁵ क्या बअल को पूजते हो¹¹⁶ और छोड़ते हो सब से अच्छ पैदा करने वाले

اللَّهُ رَبِّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأُولَىٰ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٢٧﴾

अल्लाह को जो रब है तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादा का¹¹⁷ फिर उन्होंने ने उसे झुटलाया तो वोह ज़रूर पकड़े आंएंगे¹¹⁸

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٢٩﴾ سَلَامٌ عَلَىٰ

मगर अल्लाह के चुने हुए बन्दे¹¹⁹ और हम ने पिछलों में उस की सना बाकी रखी सलाम हो

إِلَّ يَا سِينَ ﴿١٣٠﴾ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣١﴾ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا

इल्यास पर बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल

الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾ وَإِنَّ لُوطًا لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٣﴾ إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ

ईमान बन्दों में है और बेशक लूत पैगम्बरों में है जब कि हम ने उसे और उस के सब घर वालों

أَجْعَبِينَ ﴿١٣٣﴾ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ﴿١٣٦﴾ وَ

को नजात बख़्शी मगर एक बुढ़िया कि रह जाने वालों में हुई¹²⁰ फिर दूसरों को हम ने हलाक फ़रमा दिया¹²¹ और

إِنَّكُمْ لَتَسُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ ﴿١٣٧﴾ وَ بِاللَّيْلِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٨﴾ وَ

बेशक तुम¹²² उन पर गुज़रते हो सुब्ह को और रात में¹²³ तो क्या तुम्हें अक़ल नहीं¹²⁴ और

إِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾ إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ﴿١٤٠﴾

बेशक यूनस पैगम्बरों से है जब कि भरी कश्ती की तरफ़ निकल गया¹²⁵

और वोह हुदूद व अहकाम वगैरा की जामेअ। इस किताब से मुराद तौरैत शरीफ़ है। 114 : जो बअलबक्क और उस के नवाह के लोगों की तरफ़ मक्कस हुए। 115 : या'नी क्या तुम्हें अल्लाह तआला का खौफ़ नहीं। 116 : "बअल" उन के बुत का नाम था जो सोने का था, उस की लम्बाई बीस गज़ थी, चार मुंह थे, उस की बहुत ता'जीम करते थे, जिस मक़ाम में वोह था उस जगह का नाम "बक्क" था इसी से बअलबक्क मुक्कब हुवा, येह विलादे शाम में है। 117 : उस की इबादत तर्क करते हो। 118 : जहन्नम में 119 : या'नी उस कौम में से अल्लाह तआला के बरगुजीदा बन्दे जो हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए, उन्होंने ने अज़ाब से नजात पाई। 120 : अज़ाब के अन्दर। 121 : या'नी हज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام की कौम के कुफ़्फ़ार को। 122 : ऐ अहले मक्का ! 123 : या'नी अपने सफ़रों में रोज़ो शब तुम उन के आसार व मनाज़िल पर गुज़रते हो। 124 : कि उन से इब्रत हासिल करो। 125 : हज़रते इब्ने अब्बास और वहब का कौल है कि हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी कौम से अज़ाब का वा'दा किया था, इस में ताखीर हुई तो आप उन से छुप कर निकल गए और आप ने दरियाई सफ़र का कस्द किया, कश्ती पर सुवार हुए, दरिया के दरमियान में कश्ती ठहर गई और उस के ठहरने का कोई सबबे जाहिर मौजूद न था, मल्लाहों ने कहा इस कश्ती में

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿۱۳۱﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿۱۳۲﴾ فَلَوْ

तो कुरआ डाला तो धकेले हुआ में हुवा फिर उसे मछली ने निगल लिया और वोह अपने आप को मलामत करता था¹²⁶ तो अगर

لَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿۱۳۳﴾ لَلْبَيْتِ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿۱۳۴﴾

वोह तस्वीह करने वाला न होता¹²⁷ जरूर उस के पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाए जाएंगे¹²⁸

فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ﴿۱۳۵﴾ وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ﴿۱۳۶﴾

फिर हम ने उसे¹²⁹ मैदान पर डाल दिया और वोह बीमार था¹³⁰ और हम ने उस पर¹³¹ कहू का पेड़ उगाया¹³²

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ﴿۱۳۷﴾ فَامْتُوا فَسَتَعْنَهُمْ إِلَى

और हम ने उसे¹³³ लाख आदमियों की तरफ भेजा बल्कि ज़ियादा तो वोह ईमान ले आए¹³⁴ तो हम ने उन्हें एक वक़्त

حِينَ ﴿۱۳۸﴾ فَاسْتَفْتِهِم أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ﴿۱۳۹﴾ أَمْ خَلَقْنَا

तक बरतने दिया¹³⁵ तो उन से पूछो क्या तुम्हारे रब के लिये बेटियां हैं¹³⁶ और उन के बेटे¹³⁷ या हम ने मलाएका

الْمَلَائِكَةَ إِنَّا نَاوَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿۱۴۰﴾ إِلَّا أَنَّهُمْ مِّنْ أَفْكَهٍ لِّيَقُولُونَ ﴿۱۴۱﴾

को औरतें पैदा किया और वोह हाज़िर थे¹³⁸ सुनते हो बेशक वोह अपने बोहतान से कहते हैं

وَلَدَ اللَّهُ ﴿۱۴۲﴾ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿۱۴۳﴾ أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿۱۴۴﴾ مَا

कि **Allah** की औलाद है और बेशक जरूर वोह झूठे हैं क्या उस ने बेटियां पसन्द कीं बेटे छोड़ कर तुम्हें

अपने मौला से भागा हुवा कोई गुलाम है, कुरआ डालने से जाहिर हो जाएगा, कुरआ डाला गया तो आप ही के नाम निकला, तो आप ने फ़रमाया : मैं ही वोह गुलाम हूँ और आप पानी में डाल दिये गए क्यूं कि दस्तूर येही था कि जब तक भागा हुवा गुलाम दरिया में गर्क न कर दिया जाए उस वक़्त तक कशती चलती न थी । ¹²⁶ : कि क्यूं निकलने में जल्दी की और कौम से जुदा होने में अम्ने इलाही का इन्तिज़ार न किया ¹²⁷ : या'नी जिन्ने इलाही की कसरत करने वाला और मछली के पेट में "لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ" पढ़ने वाला ¹²⁸ : या'नी रोज़े क्रियामत तक । ¹²⁹ : मछली के पेट से निकाल कर उसी रोज़ या तीन रोज़ या सात रोज़ या चालीस रोज़ के बा'द ¹³⁰ : या'नी मछली के पेट में रहने के बाइस आप ऐसे ज़ईफ़ नहीफ़ और नाजुक हो गए थे जैसा बच्चा पैदाइश के वक़्त होता है, जिस्म की खाल नर्म हो गई और बदन पर कोई बाल बाक़ी न रहा था ¹³¹ : साया करने और मख़िख़ों से महफूज़ रखने के लिये ¹³² : कहू की बेल होती है जो ज़मीन पर फैलती है, मगर येह आप का मो'जिज़ा था कि येह कहू का दरख़्त कद वाले दरख़्तों की तरह शाख़ रखता था और उस के बड़े बड़े पत्तों के साए में आप आराम करते थे और ब हुक्मे इलाही रोज़ाना एक बकरी आती और अपना थन हज़रत के दहने मुबारक में दे कर आप को सुब्दो शाम दूध पिला जाती, यहां तक कि जिस्मे मुबारक की जिल्द शरीफ़ या'नी खाल मजबूत हुई और अपने मौक़अ से बाल जमे और जिस्म में तुवानाई आई । ¹³³ : पहले की तरह सर ज़मीने मौसिल में कौमे नैनवा के ¹³⁴ : आसारे अज़ाब देख कर (इस का बयान सूरए यूनुस के दसवें रकूअ में गुज़र चुका है और इस वाक़िए का बयान सूरए अम्बियाअ के छठे रकूअ में भी आ चुका है) ¹³⁵ : या'नी उन की आखिरी उम्र तक उन्हें आसाइश के साथ रखा । इस वाक़िए के बयान फ़रमाने के बा'द **Allah** तअ़ाला अपने हबीबे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से फ़रमाता है कि आप कुफ़ारे मक्का से इन्कारे बअस की वज्ह दरयाफ़्त कीजिये । चुनान्चे इशाद फ़रमाता है : ¹³⁶ : जैसा कि जुहेना और बनी सलमा वग़ैरा कुफ़ार का ए'तिक़ाद है कि फ़िरिशते खुदा की बेटियां हैं ¹³⁷ : या'नी अपने लिये तो बेटियां गवारा नहीं करते बुरी जानते हैं और फिर ऐसी चीज़ को खुदा की तरफ़ निस्वत करते हैं । ¹³⁸ : देख रहे थे, क्यूं ऐसी बेहूदा बात कहते हैं ।

لَكُمْ ۚ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٣﴾ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾ أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ

क्या है कैसा हुकम लगाते हो¹³⁹ तो क्या ध्यान नहीं करते¹⁴⁰ या तुम्हारे लिये कोई

مُبَيِّنٌ ﴿١٥٦﴾ فَأَتُوا بِكِتَابِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ﴿١٥٤﴾ وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ

खुली सनद है तो अपनी किताब लाओ¹⁴¹ अगर सच्चे हो और उस में और जिनों में

الْجَنَّةِ نَسْبًا ۖ وَلَقَدْ عَلِمْتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

रिश्ता ठहराया¹⁴² और बेशक जिनों को मा'लूम है कि वोह¹⁴³ ज़रूर हाज़िर लाए जाएंगे¹⁴⁴ पाकी है **अल्लाह** को

عَبًا يَصِفُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿١٦٠﴾ فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿١٦١﴾

उन बातों से कि यह बताते हैं मगर **अल्लाह** के चुने हुए बन्दे¹⁴⁵ तो तुम और जो कुछ तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो¹⁴⁶

مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفِتْنَيْنِ ﴿١٦٢﴾ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مَنَّا

तुम उस के खिलाफ किसी को बहकाने वाले नहीं¹⁴⁷ मगर उसे जो भड़कती आग में जाने वाला है¹⁴⁸ और फिरिश्ते कहते हैं

إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿١٦٣﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصّٰفُّونَ ﴿١٦٥﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ

हम में हर एक का एक मकाम मा'लूम है¹⁴⁹ और बेशक हम पर फैलाए हुकम के मुन्तज़िर हैं और बेशक हम

السّٰبِقُونَ ﴿١٦٦﴾ وَإِنْ كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿١٦٤﴾ لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنْ

उस की तस्बीह करने वाले हैं और बेशक वोह कहते थे¹⁵⁰ अगर हमारे पास अगलों की कोई

الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾ لَكِنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿١٦٩﴾ فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ

नसीहत होती¹⁵¹ तो ज़रूर हम **अल्लाह** के चुने बन्दे होते¹⁵² तो उस के मुन्किर हुए तो अन्करीब

يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الرُّسُلِينَ ﴿١٧١﴾ إِنَّهُمْ لَهُمُ

जान लेंगे¹⁵³ और बेशक हमारा कलाम गुज़र चुका है हमारे भेजे हुए बन्दों के लिये कि बेशक उन्हीं

139 : फ़ासिद व बातिल 140 : और इतना नहीं समझते कि **अल्लाह** तआला औलाद से पाक और मुनज्जा है । 141 : जिस में यह सनद हो 142 : जैसा कि बा'जू मुशिरकीन ने कहा था कि **अल्लाह** ने जिनों में शादी की इस से फिरिश्ते पैदा हुए (مَعَادِ اللّٰهِ) कैसे अज़ीम कुफ़्र के मुर्तकिब हुए । 143 : या'नी इस बेहूदा बात के कहने वाले 144 : जहन्नम में अज़ाब के लिये । 145 : ईमानदार । **अल्लाह** तआला की पाकी बयान करते हैं उन तमाम बातों से जो यह कुफ़्रारे ना बकार कहते हैं । 146 : या'नी तुम्हारे बुत सब के सब वोह और 147 : गुमराह नहीं कर सकते 148 : जिस की किस्मत ही में यह है कि वोह अपने किरदारों बंद से मुस्तहिक़के जहन्नम हो । 149 : जिस में अपने रब की इबादत करता है । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फरमाया कि आस्मानों में बालिशत भर भी जगह ऐसी नहीं है जिस में कोई फिरिश्ता नमाज़ न पढ़ता हो या तस्बीह न करता हो । 150 : या'नी मक्काए मुकर्रमा के कुफ़्रारे मुशिरकीन सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की तशरीफ आवरी से पहले कहा करते थे कि 151 : कोई किताब मिलती 152 : उस की इताअत करते और इख़्लास के साथ इबादत बजा लाते । फिर जब तमाम किताबों से अफ़ज़ल व अशरफ़ मो'जिज़ किताब उन्हीं मिली या'नी कुरआने मजीद नाज़िल हुवा 153 : अपने कुफ़्र का अन्जाम ।

